।। श्री श्याम चालीसा ।।

ॐ श्री श्याम देवाय नमः
दोहा: श्री गुरु चरण ध्यान धरि, सुमिरि सच्चिदानन्द।
श्याम चालीसा भणत हूँ, रच चौपाई छन्द।।

चौपाई
श्याम श्याम भजि वारम्वारा। सहज ही हो भवसागर पारा।।
इन सा देव न दूजा कोई। दीनदयाल न दाता होई।।
भीम सुपुत्र अहिलवती जाया। कही भीम का पौत्र कहाया।।
ये कथा सही कल्पान्त्र। तनिक न मानों इसमें अंतर।।
बरबरीक विष्णु अवतारा। भक्तन हेतु मनुज तनु धारा।।
वासुदेव देवकी पियारे। यशोमती मैया नन्द दुलारे।।
मधुसूदन गोपाल मुरारी। वृजकिशोर गोवर्धन धारी।।
सियाराम श्री हरि गोविंदा। दीनदयाल श्री बाल मुकुन्दा।।
दामोदर रणछोड़ बिहारी। नाथ द्वारिकाधीश खरारी।।
नरहरि रूप प्रहलाद पियारा। खम्ब फाड़ि हिरनाकुश मारा।।
राधा बल्लभ रुक्मण कांता। गोपी बल्लभ कंशहनन्ता।।
मनमोहन चित्त चोर कहाये। माखन चोरि चोरि कर खाये।।
मुरलीधर यदुपति घनश्यामा। कृष्ण पतित पावण अभिरामा।।
मायापति लक्ष्मीपति ईशा। पुरूषोत्तम केशव जगदीश।
विश्वपति जय भुवन पसारा। दीनबन्धु भक्तन रखवारा।।
प्रभु का भेद न कोई पाया। शेष महेश थके मुनिराया।।
नारद शारद ऋषि योगिंदर। श्याम श्याम सब रटत निरंतर।।
कवि कोविद करि न सकै गिनन्ता। नाम अपार, अथाह अनंता।।
हर सृष्टि हर युग भाई। लीन अवतार भक्त सुखदाई।।
हृदय मांहि करि देखु विचारा। श्याम भजे तो हो निस्तारा।।
कीर पढ़ावत गणिका तारी। भीलनी की भक्ति बलिहारी।।
सती अहिल्या गौतम नारी। भई श्राप वश शिला दुखारी।।
श्याम चरण रज में चित्त लाई। पहुँची पती लोक में जाई।।
अजामील अरु सदन कसाई। नाम प्रताप परम गति पाई।।
जाके श्याम नाम आधारा। सुख लहहिं दुख दूर हो सारा।।
श्याम सुलोचन है अति सुन्दर। मोर मुकुट सिर तन पीताम्बर।।

गल वैजेन्ती माल सुहाई। छवि अनूप भक्तन मन भाई।।
श्याम-श्याम सुमिरहु दिन राति। शाम दुपहरि अरू परभाती।।
श्याम सारथी जिसके रथ के। रोडे दूर होय उस पथ के।।
श्याम भक्त न कहीं पर हारा। भीड़ पड़ी तब श्याम पुकारा।।

रसना श्याम नाम रस पी ले। जीले श्याम नाम के हीले।।
संसारी सुख भोग मिलेगा। अन्त श्याम सुख योग मिलेगा।।
श्याम प्रभु है तन के काले। मन के गोरे भोले भाले।।
श्याम संत भक्तन हितकारी। रोग दोष अघ नाशै भारी।।
प्रेम सहित जो नाम पुकारा। छन में हो भव सागर पारा।।
खाटू में है मथुरा वासी। पारब्रह्म पूर्ण अविनाशी।।
सुधा तान भरि मुरली बजाई। दिल्ली प्रान्त जहां सुनि पाई।।
वृद्ध बाल जेते नारी नर। मुग्ध भये सुनि बंशी के स्वर।।
हर वर कर पहुँचे सब जाई। खाटू में जहँ श्याम कन्हाई।।
जिसने श्याम स्वरूप निहारा। भव भय से पाया छुटकारा।।

दोहा: श्याम सलोने सांवरे, बरबरीक तनुधार।
ईच्छा पूरन मेरी प्रभु, करो न लगाओ बार।।